Vol 6 Issue 1 July 2016

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 ISSN No.2231-5063

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 4.6052(UIF) Volume - 6 | Issue - 1 | July - 2016

Golden Research Thoughts
International Recognition Multidisciplinary Research Journal
RNI : MAHMUL/2011/38887
ISSN No: 2231-5063
Impact Factor 2.2052 (UIF) [Yr. 2014]
3.4052 (UIF) [Yr. 2015]
4.6052 (UIF) [Yr. 2016]

GRT Golden Research Thoughts

"भारिया आदिम जनजाति का एक सामाजिक–सांस्कृतिक अध्ययन"

दीप्ति सिंह[1] , ज्योति सिंह [2]
[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ.प्र.)।
[2]शोधार्थी, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद (उ.प्र.)।

सारांश–
प्रस्तुत शोध–प्रपत्र मध्यप्रदेश के छिन्दवाड़ा जिले के तामिया विकास खण्ड (ब्लाक) के अन्तर्गत पातालकोट क्षेत्र के 10 गाँव में निवास कर रही विशेष पिछड़ी जनजाति भारिया पर आधारित है। प्रस्तुत विषय को चुनने का मुख्य उद्देश्य इनकी सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियों का अध्ययन करना था, क्योंकि यह जनजाति प्रायः शहरी सभ्यता से बहुत दूर गहन जंगलों के अंधेरे कोने में छोटी–बड़ी पर्वत श्रेणियों में, उनकी तलहटियों में तथा पठारी क्षेत्रों जैसे दुर्लभ जगहों में जीवन निर्वाह कर रहीं है। और प्रत्येक अर्थ में अत्याधिक पिछड़ी हुई है। जबकि पातालकोट क्षेत्र का यह क्षेत्र अपार प्रकृतिक सम्पदाओं से भरा हुआ है। शोधार्थी द्वारा अवलोकन के माध्यम से इस जनजाति के पिछड़ेपन के कारणों एवं इनके रीति–रिवाज, प्रथायें, परम्परायें अर्थात् इनके सम्पूर्ण सामाजिक–सांस्कृतिक मूल्यों को बताने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत शोध में इस जनजाति के बदलते प्रतिमान को वर्णित करने का समुचित प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना–

भारत के हृदय स्थल के रूप में सुपरिचित किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से अछुता पूरी तरह से भू आवेष्ठित राज्य मध्यप्रदेश, देश के ठीक मध्य में स्थित होने के कारण अपने नाम को चरितार्थ करता हैं। मध्यप्रदेष एक विचित्र भौगोलिक स्थिति वाला क्षेत्र कहा जा सकता है। यहॉ यदि एक ओर ऊँची पर्वतमालाएँ और अरण्यखण्ड है, तो दूसरी ओर उनसे निकलने वाली नदियों से सिंचित उपजाऊ जमीन भी है। यहॉ की उर्वरा भूमि, इस क्षेत्र खण्ड के मध्य होने के कारण और प्राकृतिक दृष्टि से सुरक्षित होने से, बाहर के आगन्तुकों के लिए दुर्गम रही है। अपनी उर्वरा शक्ति और खनिज सम्पदा को अपने अंतराल में छिपाये हुये यह विदेषियों के आकर्षण का केन्द्र भी रहा है। वर्तमान में 308245 वर्ग किलो मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ, यह देश का दूसरा सबसे बड़ा प्रदेश तथा जनसंख्या की दृष्टि से सातवां (5.87 प्रतिशत) बड़ा प्रदेश हैं। लगभग सात करोड़ की आबादी वाले प्रदेश में लगभग डेढ़ करोड़ आदिवासी हैं।

भारत का जहाँ प्रत्येक 13वाँ व्यक्ति जनजातीय है वहीं जनसंख्या के आधार पर मध्यप्रदेश का 5वां व्यक्ति जनजातीय है। यहाँ देश की संर्वाधिक जनजातियां रहती है, यहाँ उपजातियों सहित कुल 46 जनजातियां है, जिनमें से तीन जनजातियां विशिष्ट पिछड़ी जनजाति समूह की श्रेणी में आती है। मध्यप्रदेश के चार जिले झाबुआ, आलीराजपुर, धार एंव मण्डला में प्रदेश की लगभग एक चौथाई जनजाति जनसंख्या निवासरत है। झाबुआ, धार, खरगोन, शहडोल, मण्डला और छिंदवाड़ा ऐसे जिले है, जहां जनजातियों की सर्वाधिक आबादी निवास करती है।

तालिका : 1.1 मध्यप्रदेश की कुल अनुसूचित जनजाति एंव कुल भारिया जनजाति जनसंख्या प्रतिशत

	वर्ष	कुल जनसंख्या	पुरुष	महिलायें	प्रतिशत
मध्यप्रदेश	2001	6,03,48,023	31443652	28904371	15.2 (भारत की जनसंख्या से)
अनुसूचित जनजातियों	2001	1,22,33,474	61,95,240	60,38,234	20.28
भारिया	2001	1,52,474,	77,235	75,237	1.25

स्त्रोतः आदिवासी शोध व विकास संस्थान, भोपाल मध्यप्रदेश द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदन (वर्ष 2001)।

मध्यप्रेदश के छिन्दवाड़ा जिले के तामिया विकासखण्ड की भारिया आदिवासियों की निवास स्थली ''पातालकोट घाटी'' के नाम से जानी जाती है। जबलपुर संभाग के छिन्दवाड़ा जिले का वन एवं पर्वतीय क्षेत्र से घिरा उत्तरी भाग ''सतपुड़ा'' के नाम से विख्यात है। सतपुड़ा घाटी के मध्य क्षेत्र से ऊंची पर्वतीय घाटी का ''कटोरा नुमा आकृति'' का स्थल ही भारिया आदिवासियों की आवास स्थली ''पातालकोट'' के नाम से जाना जाता है। इस संपूर्ण घाटी में मध्यप्रदेष की तीन विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक ''भारिया'' जनजाति के लोग साथ–साथ कुछ जनसंख्या में गौड़ जनजाति भी निवास करते है। ये गॉव समय–समय पर आबाद और वीरान होते रहते है। पातालकोट घाटी का 1200 से 1500 फुट गहरा मनोरम भू–भाग, एक तरफ ग्रेनाईट की सख्त दीवार और दूधी व सहायक नदी गायनी एवं अन्य पहाड़ी नदी–नालों से घिरी हुई घोड़े के पैर की आकृति समान नजर आती है। तामिया में एकीकृत आदिवासी विकास परियोजना संचालित है। पातालकोट विकास अभिकरण, तामिया जिले की स्थापना षासन द्वारा 26 जून 1978 में की गई है।

पातालकोट की भारिया जनजाति का उद्भव उत्पति :–''भारिया'' जनजाति मध्यप्रदेष की एक प्रमुख आदिम जनजाति के रूप में जानी जाती है। ये द्रविड़ समूह की जनजति के सदस्य है।

तालिका : 1.2 छिन्दवाड़ा जिले के तामिया विकासखण्ड की भारिया जनजाति जनसंख्या (वर्ष 2001)

क्रम सं0	थ्जला	विकासखण्ड	ग्रामों की संख्या	भारिया जनजाति जनसंख्या			परिवार संख्या
				महिला	पुरुष	कुल	
1.	छिन्दवाड़ा	तामिया	12	1075	1060	2135	371

स्त्रोतः आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान, भोपाल मध्यप्रदेश द्वारा प्रकाशित प्रतिवेदन (वर्ष 2001)।

ऊपर से देखने पर इनके घर ''माचिस की डिब्बी'' समान दिखते है। रसेल एवं हीरालाल कथनानुसार भारिया अपनी उत्पत्ति से संबंधित अनेकों कथाऐं बताते है लेकिन इनकी उत्पत्ति संबंधी कथाओं पर विश्वास नहीं किया जा सकता। डॉ. विवेकदत्त झा ने इनकों तीसरी–चौथी शताब्दी का नाठा वंष से संबंधित बताया है। भारिया अपने कंधे पर शिवलिंग लेकर चलते थे, वे राजा का सामान भी ढोते, अतः वे भारवाहक ''भारिया'' कहलाये। ऐसा माना जाता है कि ''भारिया'' की भार शब्द से उत्पत्ति हुई होगी। भार का अर्थ है वजन। इसके साधारण अर्थानुसार भारिया कुली या बोझा ढोने वाले होगे। लेकिन यहॉं के निवासी इस अर्थ से स्वयं को संबंधित नहीं मानते। अतः रसेल व हीरालाल ने सत्य ही कहा है कि पूरे पातालकोट में इनके बारे में हर गॉव में अलग–अलग कहानियॉ प्रचालित है।

ऐतिहासिक विवेचनाः– ''भारिया'' जनजाति का इतिहास 20वीं सदी से जुड़ा माना गया है। जो गौर राजघराने का भाग था। 1803 अवधि में गरीब ''भारिया'' भरदागढ़ में रहते थे जिनकी जागीर का भाग पातालकोट घाटी में था। 1818 में ब्रिटिश सेना ने भोंसले राजकुमार अप्पा साहिब का सीतीबल्दी की लड़ाई में हराया जिससे ये पातालकोट में बाहर की तरफ निकली हुई एक विषाल चटटान जो ''राजाखोह'' के नाम से जानी जाती थी, में आकर रहने लगे। इसी घटना से इस घाटी का नाम पातालकोट पड़ा। पाताल यानी नीचे की दुनिया और कोट को मराठी में किला या प्रसाद कहते है। अर्थात् नीचे की दुनिया का आश्रय स्थल। सतपुड़ा पर्वतीय क्षेत्र, विशेषतः "पातालकोट" गौंड राजाओं और मराठों के आधिपत्य में था। यहॉ पर गौडों की सामन्ती व्यवस्था थी। सर जे.जेनकिंस के अनुसार यहॉ के पर्वतीय एवं प्राकृतिक वन क्षेत्रों में

मराठा और गोंडों की शक्ति स्थापित थी। 1857 तक यहॉ पर सनादस का राज्य था। सनादस की राज्य प्रणाली में 1902 से बदलाव आना प्रारंभ हुआ और राजस्व व पुलिस सरकार के अधिनस्थ हो गई एवं स्वतंत्रता पश्चात् वे जागीरदार भी समाप्त हो गये।

भारिया जनजाति की सामाजिक संरचना :– प्रत्येक समाज की सामाजिक संरचना, वहॉ के संरचनात्क नियमों द्वारा संचालित होती है। समाजषास्त्री रेडक्लिक ब्राउन, इवान्स विचार्ड और एल.एफ.नेडिल ने व्यक्ति, समूह और नियमों को सामाजिक संरचना के महत्वपूर्ण तत्वों माना है। स्वर्गीय श्यामाचरण दुबे ने अपने ग्रामीण संरचना प्रारूप में व्यक्ति, परिवार, गौत्र और नातेदारी को प्रमुख माना है। पातालकोट के भारिया जनजाति की सामाजिक संरचना के अंतर्गत हम परिवार, नातेदारी व्यवस्था, वंश, गोत्र व्यवस्था और विवाह को सम्मिलित कर रहे है। भारिया जनजाति की सामाजिक संरचना की इकाई व्यक्ति है। यह पुरूष प्रधान सत्ता है। भारिया समाज में परिवार की विशिष्ट भूमिका है। यहां परिवारों के विघटन, विवाह पश्चात् पिता स्वयं ही पुत्र को परिवार से मुक्त कर के करता है। सामान्य आवास, आर्थिक सहयोग, पारिवारिक सुरक्षा भारिया परिवार की एक विशिष्टता है। यहॉ एकल परिवारों का आधिपत्य है। यदि किसी परिवार में पुत्र नहीं है तो पिता अपने साथ या सहारे के लिए अपने लड़की दामाद को अपने साथ ही रख लेते है। परिवार के सभी सदस्य मिल जुलकर पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते है। बच्चे भी पालकों के साथ उत्पादक और संरक्षण कार्य करते है। भारिया परिवार में पति–पत्नी मिलकर आर्थिक कार्यों का संपादन करते हैं। घर की साफ–सफाई, पानी भरना, अनाज की पिसाई (हाथ की चक्की में) पशुओं की सेवा, भोजन व्यवस्था महिलाओं का काम है, वही खेतों में कृषि कार्य, वनों से लकड़ी काटना, वनोपज संग्रहण, षिकार आदि कार्य पुरूषों द्वारा किए जाते हैं लेकिन आवश्यकता पड़ने पर पुरूषों द्वारा महिला को कार्य में और महिला द्वारा पुरूषों को कार्यों में परस्पर मदद भी की जाती है। गॉव के वयस्कों द्वारा जवान बच्चों को समाज के मूल्य–आदर्शो का प्रशिक्षण दिया जाता है। पातालकोट के अधिकांश परिवारों की नातेदारी यहॉ के विभिन्न ढानों, गॉवों में देखी गई है। भारिया जनजाति के नातेदारी संबंध सीमित क्षेत्रों के कारण इनका संबंध घन्त्व काफी प्रगाढ़ और मजबूत है जो इनकी सामाजिक संरचना की सुदृढ़ता प्रदर्षित करती है। भारिया समाज में प्रत्येक परिवार का संबंध उसके वंष या विवाह से है। वंश का संबंध गोत्र से है। सभी मानव समाजों में नातेदारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है विशेषतः आदिम समाजों में तो ये अंतः वैयक्तिक संबंधों, आर्थिक सहयोग ओर अन्य सामाजिक प्रतिबंधों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी है।

तालिका संख्या– 1.3
भारिया जनजाति समाजों में नातेदारी व्यवस्था

वंश का संबंध	नातेदारी (सम्बोधन)	वंश का संबंध	नातेदारी (सम्बोधन)
पिता और पिता के बड़े भाई को	दद्दा	पिता के पिता को	दादाजी
पिता के छोटे भाई को	कक्का	बड़े भाई की पत्नी को	भाभी
पिता के छोटे भाई की पत्नी को	काकी	मॉ के बड़े और छोटै भाईयों को	मामा या मामू
भाई को	भैया	पिता के बड़े भाई की पत्नी को	बऊ (मॉ) या बडी बऊ (बड़ी मॉ)
मॉ के पिता जी का	नाना या बाबा	मॉ की बहनें	मैसी

भारिया में पत्नी अपनी पति का नाम नही लेती है। इनमें नातेदारी व्यवस्था समय और पीढ़ी के साथ बढ़ती जाती है। पातालकोट में भारिया जनजाति 51 गोत्रों का उल्लेख करती है लेकिन विभिन्न गॉवों से मूलतः 12 गोत्र ही प्रमुखतः पातालकोट में देखे गये।

विवाह :– भारिया जनजाति में विवाह को संस्कार न मानकर परिवार का महत्वपूर्ण कृत्य माना जाता है। भारिया जनजाति में बहुपत्नी विवाह का प्रचलन है। कोंडिया गॉव के अधिकांश परिवार बहुपत्नी है। भारिया जनजाति के पुरूष एक से अधिक विवाह कर सकते हैं लेकिन भारिया स्त्री जीवन में एक बार ही विवाह कर सकती है। यहॉ पर किशोरावस्था के प्रारंभ होते ही विवाह कर दिया जाता है। भारिया जनजाति में विवाह के चार प्रकार देखे गये है।

1.दो परिवारों में समझौता वार्ता द्वारा विवाह का होना।
2.सेवा विवाह, जिसमें लड़का – लड़की के घर सेवा कार्य करता है।

3.जिसमें लड़का–लड़की भाग कर प्रेम विवाह करते है।
4.जबरन विवाह हैं जिसमें लड़की जबरदस्ती लड़के के घर में आकर रहने लगती है।

यहॉ पर मुख्यतः समझौता विवाह और सेवा विवाह का प्रचलिन है। भारिया जनजाति में विवाह संबंधों में सगे मामा–बुआ के लड़के–लड़कियों को प्रथम प्राथमिकता दी जाती है। वर्तमान में भारिया समाज भी दहेज प्रथा का शिकार है।

भारिया जनजाति की सांस्कृतिक संरचनाः– निरन्तरता में ही समाज का अस्तित्व निर्भर है। जन्म एक जैविक प्रक्रिया है, लेकिन जन्म की निरन्तरता, अस्तित्व, स्थापिता, अभिवृद्धि का आधार समाज है। व्यक्ति और समाज के संबंध को समाजशास्त्रियों ने आध्यात्मिक और उपयोगितावादी बताया है। समाज के साथ–साथ संस्कृति का भी विकास हुआ है। मनुष्य ही संस्कृति का निर्माता है और उसका सजग संवाहक भी। भारत में प्रायः दो तरह की संस्कृति की व्याख्या की जाती है, एक प्राचीन सुविचारित ''वैदिक संस्कृति'' और दूसरी ''व्यापक लोक संस्कृति''। लोक संस्कृति के विभिन्न आयाम जीवन, साहित्य कला, परम्परा में सन्निहित होते है। जनजातीय जीवन लोक संस्कृति पर आधारित है। अतः भारिया जनजाति की सांस्कृतिक संरचना को जानने के लिए हमें भारिया की परम्परा, प्रथा, रीति–रिवाज, संस्कार, एवं धार्मिक व्यवहारों को जानना आवश्यक है। पातालकोट में जन्म, मुण्डन, विवाह और मृत्यु ये 4 प्रमुख संस्कार प्रचलित है।

भारिया निषेध :– प्रत्येक जनजाति समाज के अपने कुछ विशिष्ट निषेध होते है। जिनका वे लोग पालन करते है। निषेध का उल्लंघन करने पर पंचों द्वारा दण्ड दिया जाता है। भारिया जनजाति में सगोत्र विवाह, शारीरिक संबंध स्थापित करने पर विशेष एवं कठिन दण्ड दिये जाते है। भारिया में दूसरी जनजाति में विवाह करने पर भी रोटी का दण्ड (समाज को भोजन कराना) लगता हैं।

भारिया देवी –देवता :– भारिया जनजाति में धर्म का परम्परागत स्वरूप देवों का वर्गीकरण, विश्वास, हिन्दू धर्म की तरह ही है। जनसंपर्क के अभाव में उनका तार्किकीकरण और लौकिकीकरण नहीं हो सका है। पारम्परिक देवी–देवता में भारिया गॉवों में एक पवित्र जगह पर केरकी माता अर्थात् काकई वृक्ष के समीप रखे पत्थरों से जानी जाती है। गॉव की दूसरी देवी मुथुआ देवी, संपूर्ण ग्रामीण समुदाय का कल्याण करने वाली देवी है। इनकी एक ओर मुख्य देवी झिरिया माता है जो स्वास्थ्य और कल्याण की देवी है। भारिया समाज के कृषि के देवता भीमसेन है। भीमसेन के अलावा सिनवारदेव, डोंगरदेव, भागदेव, कड़ोपन, भस्मासुर भी इनके देवता है। इन प्रमुख देवी–देवताओं के अतिरिक्त भारिया घरों में बूढ़ी दाई, कोड़िया कातरपल, ठाकुरदेव, नांगरदेव, धानाबाई, सकलई, दूल्हादेव का भी पूजन किया जाता है। भारिया जनजाति में पारस्परिक धार्मिक विश्वासों से संबंधित विधि विधानों के संपादन के लिये तीन प्रकार के पुरोहित होते हे –भमुका , पडिहार, देवचढ़, भुमका गॉव में होने वाले वार्षिक धार्मिक कृत्य कराता है। पडिहार रोगी की देखरेख अर्थात् झाक–फूॅक में काम आता है। देवचंढ़ सामान्य धार्मिक कृत्यों में बुलाया जाता है।

वेशभूषा :– भारिया जनजाति में सर्वाधिक बदलाव या परिवर्तन उनका वेषभूषा में परिलक्षित हुआ है। भारिया जनजाति के परिवारों की वेषभूषा का तुलनात्मक अध्ययन कुरूप (1986) ने किया था जिसे आधार मानकर वर्तमान की तुलना स्पष्ट करती है कि भारिया पुरूष और महिला की वेशभूषा में व्यापक परिवर्तन हुआ है और अब ये आधुनिक वस्त्र, टोपी, शर्ट, ब्लाउज का प्रयोग करने लगे है। प्राचीन समय में पुरूष पगड़ी और छिन्दी अर्थात् पटटीनुमा कपड़ा सिर पर लपेटते थे एवं महिलायें अंगिया। परंतु वर्तमान में पुरूष बंडी (जेब और बांहनुमा बनियान), टोपी, शर्ट और जैकेट एवं महिलायें पोलका और ब्लाउज पहनने लगी है। वहीं पुरूष और महिला के निचले वस्त्रों में पुरूष लंगोटी, धोती बांधते थे। वर्तमान में पुरूष पायजामा, पेंट पहन रहे है तथा महिलाऐं साड़ी पहन रही है। निचले वस्त्रों में भी पुरूष और महिला में आधुनिकता की ओर ही परिवर्तन अग्रसित हुआ है। 1940 में भारिया नंगे पैर रहते थे। वर्तमान में चप्पल एवं जूता पहनना शुरू कर दिया है। लेकिन अभी भी जूता–चप्पल इनके लिए आवश्यक नहीं है।

भारिया केश–विन्यास :– भारिया महिला–पुरूषों के बालों की रख–रखाव और श्रृंगार में भी व्यापक आधुनिकता परिलक्षित होने लगी है। 1940 में भारिया पुरूष प्रायः सिर गंजा रखते थे। लेकिन आज ये आधुनिक रूप से कंटिंग कराने लगे और आज इनके केशों में शहरीकरण स्पष्ट दिखता है। 1950 में भारिया महिला बालों को लपेटकर जूड़ा बनाती थी वही वर्तमान में ये शहरी महिलाओं की तरह जूड़ा एंव चोटी दोंनो करती है। केश विन्यास स्पष्ट करती है कि भारिया जनजाति आधुनिकता की ओर अग्रसर है।

घर एवं घरेलू उपयोग की वस्तुयें :– आज भारिया समाज के घरेलू उपयोग की वस्तुओं में भी काफी परिवर्तन आ गया हैं। 1940 में ये घास फूंस की झोपड़ी में रहते थे वही आज घरों में खपरैल, लकड़ी के दरवाजे, खिड़की का प्रयोग करने के साथ–साथ वर्तमान में तो घटलिंगा, गैलडुब्बा, रातेड़, हर्राकछार के कुछ घर पक्के भी है। शासन की मदद से इनके घर अब व्यवस्थित हो गये हैं। आज गॉवों के घरों में बिजली भी है। पहले ये मिट्टी की हंडी, खपरी में खाना बनाते थे पर आज प्रायः सभी घरों में एल्यूमिनियम की गंजे, लोहे की कढ़ाई, तवा देखने को मिलते है। 1940 में भारिया जनजाति पत्तल, दोनों (पलाश पत्ते थाली, कटौरी) में भोजन कराते थे लेकिन आज एल्यूमिनियम, कॉसा, चीनी मिट्टी के बर्तन में खाना खाते है। अनाज भण्डारण में भारिया समाज परम्परागत ही है। वर्तमान में भारिया घरों में लकड़ी के तख्त, खटिया उपलब्ध है, लेकिन 80 प्रतिशत भारिया आज भी जमीन पर ही सोना पसंद करते है। सोने के लिए वस्त्र, बिस्तर परम्परागत ही है अर्थात् अन्न भण्डारण एवं बिस्तर में परिवर्तन नहीं हुआ।

भारिया जनजाति की आर्थिक संरचना :– किसी समाज या समुदाय के जनजीवन का अध्ययन सामाजिक शोध की प्राचीन परम्परा है। सामाजिक शोध के अंतर्गत समाजशास्त्रीय घटकों की विवेचना के साथ–साथ हम आर्थिक संरचनात्मक तत्वों की भी समीक्षा करते है।

आर्थिक संरचना और सामजिक विकास को एक दूसरे का पूरक माना गया है। विश्व के सभी भू–भागों के क्षेत्रीय निवासी अपने भू–भाग के प्राकृतिक संसाधनों पर श्रम कर जो उत्पादन करते है उसी से उनका भरण पोषण होता है। श्रम और श्रम फल अर्थात् उत्पादन पर समाज की अर्थव्यवस्था आधारित होती है। जनजातीय समाज की आर्थिक संरचना भी कृषि, वनोपज और शिकार पर आधारित होती है। पातालकोट नैसर्गिक पर्वतीय वन बाहुल्य घाटी है अतः वनोपज यहाँ की आर्थिक संरचना का प्रमुख घटक है।

पातालकोट की आर्थिक संरचना के 4 प्रमुख घटक है :–

• ***प्राकृतिक ससांधन :–*** पातालकोट वानिकी सम्पदा से सम्पन्न क्षेत्र है। भौगोलिक संरचना की दुर्गमता के कारण यहाँ पर उपलब्ध वानिकी सम्पदा का दोहन सम्भव नहीं है। अधिकांश कृषि क्षेत्र बंजर, पथरीली भूमि का है। कहीं कहीं तराई में काली उपजाऊ भूमि है। प्रमुख फसलों में मक्का, कोदो, कुटकी, गेंहू, चना आदि की फसलें कुछ वर्ष पहले से बोई जाने लगी है। मजदूरी करना, वनोपज एवं पशुपालन आर्थिक जीवन के प्रमुख स्त्रोत है। बबजूद इसके इनका आर्थिक जीवन तंगी वाला है। भूमि कम उपजाऊ है, खेती वर्षा पर निर्भर है, सिंचाई साधनों नहीं है, सरकार द्वारा जंगलों के उपभोग पर पूर्णतः प्रतिबंध, इनके आर्थिक समस्याओं के कारण है। यहाँ के शत–प्रतिशत भारिया गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन कर रहे है। ये हस्तशिल्प के क्षेत्र में अत्यंत पिछड़ी है। पातालकोट की सम्पूर्ण आर्थिक संरचना का केन्द्रक प्राकृतिक संसाधन है। इस घाटी में महुआ, आम, जामुन, इमली, और बेर के वृक्षों की बहुतायत है। फरवरी –जुलाई माह तक ये इन पर निर्भर रहते है इसीलिए फरवरी में स्कूलों में उपस्थिति नगण्य होने लगती है। महुआ पातालकोट वासी खाने और शराब के रूप में प्रयोग करते हैं। आम, पातालकोट वासियों की प्रमुख वन सम्पदा है। आम को सब्जी, चटनी, गुठली का छिलका फोड़कर अंदर की गोही पीसकर आटे की रोटी बनाकर खाते है। इमली, जामुन और बेर और थोड़ी बहुत मात्रा में तेन्दूफल का भी उपयोग करते हैं। विक्रय हेतु यहाँ की प्रमुख वनोपज अचार, हर्रा, बहेरा और ऑवला है। इस वनोपज की बिक्री से पातालकाट के प्रत्येक परिवार को औसतन 3000–4000 रूपये की आय होती है।

• ***कृषि :–*** कृषि भारिया जनजाति का दूसरा आर्थिक संसाधन है, लगभग 25 वर्ष पातालकोट घाटी हरे भरे सघन जंगलों से आच्छादित प्रकृति की सुरम्यवादी थी। यहाँ टी और टिन्सा की तरह उच्च व्यावसायिक महत्व की साल की बहुलता थी। साल के अतिरिक्त हल्टू, साज, सलाई, ऑवला, महुआ, आम, तेन्दू (खमारपुर, हर्राकछार, लोटिया, गांव में) हर्रा–बहेरा, बांस एवं दुर्लभ जड़ी–बूटियों का घना जंगल था। भारिया यहाँ की जड़ी–बूटियों के कुषल जानकार थे। लेकिन अब मिलना दुर्लभ होता जा रहा है। प्रारंभ में भारिया दाहिया खेती किया करते थे जो आजकल शासकीय प्रतिबंधित है।

• ***श्रम कार्य :–*** छिन्द कि झाडू, बॉस की टोकनी, चटाई और जानवरों को बॉधने का गिरमा, नक्कल रस्सी उदाल वृक्ष की छाल से बनाई जाती है लेकिन इसका ये स्वयं उपयोग करते है। बाजार दूर होने के कारण बेच नहीं पाते अतः श्रम कार्य उनकी आजीविका का प्रमुख साधन है पातालकोटवासी होशंगाबाद, पिपरिया, नरसिंहपुर, गेहूँ एवं सोयाबीन की फसल कटाई के लिए पूरे गॉव सहित चले जाते है।

• ***पशुपालन व शिकार :–*** दुर्गमता के कारण पातालकोटवासी मुख्यतः बैल, बकरा, बकरी, मुर्गी ही पालते है। प्रत्येक गॉव के 1–2 घरों में गाय है। बैल कृषि कार्य हेतु और बकरा व मुर्गी बली एवं खाने के काम आते है। चारे की कमी के कारण ये गाय नहीं पालते। जंगलों के जलने के कारण यहाँ जंगली जानवर प्रायः नही आते। तेज ठंड के कारण जंगली जानवर शेर आदि का दूधी एंव गायनी नदी के उद्गम स्थल के घने जंगलों में निवास है। भालू, हिरण, काले मुँह के बंदर, जंगली बिल्ली, काला–भूरा बिच्छू विभिन्न सर्प आदि की यहाँ प्रमुखता है। भारिया मधुमक्खी के छत्ते तोड़ने में अत्यंत पारंगत है। शिकार को भारिया जनजाति में धार्मिक आवश्यकता के रूप में देखा गया है न कि शौक के रूप में।

संचार :– पातालकोट घाटी के सभी गांवों तक पहुंचने का मार्ग आज भी अत्यंत दुर्गम है। इसीलिए पातालकोट घाटी संचार संसाधनों से वंचित है। पातालकोट क्षेत्र के प्रत्येक ग्राम एक दूसरे से पगडंडी जैसे रास्ते से जुड़े है। पातालकोट क्षेत्र में आवागमन की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु पहाड़ी एवं ढलानी क्षेत्रों को सीमेंट कांक्रीट सड़क निर्माण कार्य प्रस्तावित है।

तालिका संख्या– 1.4
विकासखण्ड/तहसील में निवास करने वाली भारिया जनजाति की तहसील मुख्यालय से दूरी

क्र.स.	गांव का नाम	दूरी किलोमीटर
1.	तामिया, पिपरिया से घटालिंगा,	12 किमी0
	घटालिंगा से गुढ़ीछतरी,	2 किमी0
2.	तामिया से गैलडुब्बा,	7 किमी0
	गैलडुब्बा से कौड़िया,	3 किमी0
	गैलडुब्बा से हारमउ,	4 किमी0
	हारमउ से सूखामाण्ड,	4 किमी0
	गैलडुब्बा से घुरनी मालनी, डोमनी (पैदल मार्ग)	12 किमी0
3.	तामिया से छिंदी रोड, रातेड के ऊपर तक	22 किमी0
	ग्राम रातेड़ तक (पैदल मार्ग)	2 किमी0
	कठौतिया से चिमटीपुर (पैदल मार्ग)	2.50 किमी0
	चिमटीपुर से घोधरी गुज्जा डोंगरी (पैदल मार्ग)	5 किमी0
4.	तामिया से छिंदी रोड ग्राम डोंगरी से हर्राकछार,	9 किमी0
	हर्राकछार से जड़मादल (पैदल मार्ग),	6 किमी0
	हर्राकछार से झिरन (पैदल मार्ग)	8 किमी0
5.	तामिया से छिंदी हर्रई मार्ग से लोटिया अतरिया से सेहरा,	16 किमी0
	सेहरा से खमरापुरा (पैदल मार्ग),	2 किमी0
	सेहरा से पचगोल (पैदल मार्ग),	5 किमी0
	सेहरा से झिरन (पैदल मार्ग)	2 किमी0

स्त्रोतः प्राथमिक स्त्रोतों से प्राप्त जानकारी।

छिन्दवाड़ा से 56 किलोमीटर दूर तामिया, तामिया से 4 किलोमीटर दूर बिजौरी गॉव, बिजौरी–हर्रई मार्ग पर ही पातालकोट घाटी बसी हुई है। बिजौरी से 11 कि.मी. की दूरी पर छिन्दी गांव है जहॉ पर वन विभाग का कार्यालय है। छिन्दी गांव ''भारिया'' जनजाति का प्रमुख बाजार स्थल है। बिजौरी से हर्रई तक का सड़क मार्ग, छिन्दी विकासखण्ड हरई तक पक्का एवं इसके आगे का कार्य निर्माणरत् है। यहॉ से पातालकोट के विभिन्न गॉवों के लिए पहुॅच मार्ग पहाड़ों की कच्ची पगडंडी के रूप में निर्मित है। घाटी को जोड़ते हुये सकरी पत्थर की 50–60 सीढ़ियां बनी हुई है, जो कि 1950 में राष्ट्रपति स्व.डॉ.राजेन्द्र प्रसाद जी के आगमन पर बनाई गई थी। लेकिन पट्म श्री एस. एस.शषि ट्राईबल कल्चर, कस्टम एंड एफेनिकटिस में लिखते हैं कि 1950 में पातालकोट के रातेड़ गॉव में गर्वनर के लिए पत्थरों की सीढ़ियों बनाई गई थी। बरसात एवं रख–रखाव के अभाव में आज ये सीढ़ियों जर्जर हो रही है। जिनसे घाटी में उतरना–चढ़ना एक आम आदमी के लिए अत्यंत दुष्कर कार्य है। लेकिन भारिया जनजाति के सदस्य यहॉ पर दौड़ते–कूदते हुये उतरते–चढते है।

बदलते परिवेश में भारिया जनजाति– छिंदवाड़ा जिले में तामिया विकासखण्ड के पातालकोट इलाके में इनकी आबादी का पर्याप्त संकेन्द्रण है। एक जमाने में यह इलाका काफी अल्प विकसिकत था, लेकिन आज यहां विकास की रोशनी पहुॅच गई है। भारिया समता मूलक समाज है स्त्री–पुरुषों को बराबरी का दर्जा है। अजीविका के लिए भारिया वनोपज, जड़ी–बूटियां, घाट के झाड़ बनाने, पर निर्भर हैं। वर्तमान समय में आए परिवर्तित स्वरूप को हम संचार एवं आवगमन का प्रभाव, मध्यप्रदेष विज्ञान सभा का सहयोग एवं इनका अन्य लोगों के साथ सम्पर्क स्थापित होना मानतें है। यद्यपि अभी इनमें शिक्षा का स्तर बहुत निम्न है, जो इनकी आर्थिक दशा ठीक न होने का एक मुख्य कारण है। फिर भी शिक्षा के प्रसार ने इन लोगों को विभिन्न लघु व्यवसायों में प्रवेश पाने योग्य बना दिया है। शिक्षा–प्रसार हेतु इनके क्षेत्र में अनेक आश्रम पद्धति विद्यालय खोले गये हैं किन्तु अधिकतर परिवारों की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण इनके बच्चे स्कूल जाने के बजाय अपने परिवार के भरण–पोषण व जीविकोपार्जन हेतु अन्यत्र कार्यों में संलग्न हैं। इनकी आर्थिक दशा सुधारने हेतु सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनओं का लाभ भी इन्हें समुचित नहीं मिल पा रहा है क्योंकि शिक्षा व जागरूकता इनके सर्वागीण विकास में सबसे बडी़ बाधा है। फिर भी इस जनजाति का शहरीकरण, औद्योगिकरण व सरकारी नौकरियों में इनका प्रवेश प्रारम्भ हो चुका है। आज बदलते परिवेश से न केवल इनकी अर्थव्यवस्था बल्कि इनके सामाजिक–सांस्कृतिक पक्षों में काफी परिवर्तन द्रष्टिगोचर हो रहे हैं इस प्रकार अब ये लोग अपने परम्परागत व्यवसायों पर ही आश्रित न होकर अन्य व्यवसाय एवं नौकरी अपनाने लगे हैं, और समय के अनुकूल अपने अस्तित्व को बनाये रखने हेतु दिन–प्रतिदिन परिवर्तन की ओर अग्रसर हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.अटल, योगेश, 1965 "आदिवासी भारत" राजकमल प्रकाशन दिल्ली।
2.शुक्ला, प्रो. हीरालाल, 1997 "आदिवासी अस्मिता और विकास", मध्यप्रदेश के विशेष सन्दर्भ में"।
3.तिवारी, राकेश कुमार, 1990 "आदिवासी समाज में आर्थिक परिवर्तन" नार्दन बुक सेन्टर, नई दिल्ली।
4.गौतम, राकेश एवं जीतेन्द्र सिंह भदौरिया, 2010 "मध्यप्रदेश एक परिचय", टी.एम.एच. एजुकेशन प्राइवेट लिमिटेडं
5.हसनैन, नदीम, 2006 "जनजातीय भारत", जवाहर पब्लिकेशन्स ऐंड डिस्ट्रब्यूटर्स।
6.तिवारी, शिवकुमार, 1984 "मध्यप्रदेश के आदिवासी", हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ International Scientific Journal Consortium
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org